

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच

अनुसूचित जाति के कृषकों के लिए समनी फार्म पर “प्रक्षेत्र परिक्षण” प्रदर्शन,

दिनांक 24 फरवरी, 2023

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच द्वारा भारत सरकार की अनुसूचित जाति उपयोजना के अंतर्गत अनुसूचित जाति के कृषकों के लिए संस्थान के प्रायोगिक, समनी फार्म पर “प्रक्षेत्र परिक्षण” (On Farm Trial) प्रदर्शन आयोजित कराया गया। इस कार्यक्रम में गमनाद, रोंध, केसलू, अनोर, नाहयेर, सरभान, कुरचन इत्यादी गाँव के 15 किसानों ने भाग लिया। क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र, भरूच बारा क्षेत्र की काली लवणीय मृदा, फसल तथा पानी के प्रबंधन के क्षेत्र में अनुसंधान करता है। इस क्षेत्र की समस्याओं को देखते हुए विभिन्न प्रकार के प्रायोगिक अनुसंधान जैसे गेंहू में सोलर संचालित सिंचाई, गेंहू तथा सरसों की विविध किस्मों का मूल्यांकन का कार्य समनी फार्म पर चल रह हैं और इनकी विस्तृत रूप से जानकारी इस प्रक्षेत्र परिक्षण दी गई।

इस क्षेत्र के कुछ तालुका में अच्छे पानी की अनुपलब्धता है जिसकी वजह से रबी के मौसम में कृषि में बाधाएँ आती हैं और किसान फसल से अच्छा उत्पादन नहीं ले पाते हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए संस्थान के समनी फार्म पर अनुसूचित जाति उपयोजना के अनुदेय से सोलर से चलने वाली टपक (drip) तथा फव्वारा (sprinkler) सिंचाई का तंत्र लगाया गया है। इस तंत्र के विभिन्न पहलू जैसे सिंचाई प्रणाली, फिल्ट्रेशन यूनिट, पम्प तथा सोलर सिस्टम के बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी गयी। इस समय इस प्रक्षेत्र में गेंहू की लवण सहनशील किस्म KRL- 210 का प्रयोग लगाया गया है। एक अन्य परियोजना के तहत संस्थान में विकसित सरसों की विभिन्न लवण सहनशील किस्मों का भी यहाँ परिक्षण चल रहा है। सरसों को इस क्षेत्र में उगाने के लिए सही समय तथा उर्वरकों की सही मात्रा के बारे में पता लगाने के लिए भी परिक्षण किये जा रहे हैं, जिसके बारे में किसानों को विस्तृत जानकारी दी गयी। भारत के विविध क्षेत्रों से लाई गेंहू के किस्मों का लावणीय काली मृदाओं में मूल्यांकन के ट्राइल्स के बारे में भी किसानों को अवगत कराया। इस कार्यक्रम के आयोजन में संस्थान के वैज्ञानिक डा मोनिका शुक्ला तथा डा सागर विभुते, तथा तकनीकी अधिकारी चंपक तावियाड तथा बलवंत डामोर ने भरपूर योगदान दिया।





